CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 03 (2019-20)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (12)**

   भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह एक विलक्षणता है कि एक राग जितनी बार प्रस्तुत होता है- उतनी बार नयापन उभरता है, इसका आकर्षण कभी नहीं चूकता। इसकी समकालीन गुणवत्ता सालों के फ़ासले में नहीं बदलती, यह समय के छोटे-छोटे हिस्से में भी घटित होती है। इसके बावजूद इसमें ऐसा भी तत्त्व है जो कभी नहीं बदलता। वह समय की गति को लाँघ जाता है, शाश्वतता और समकालीनता की यही संधि भारतीय कला विधाओं की निजी पहचान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तत्त्व लोकगीतों में निहित है। लोकगीतों की धुनों को शास्त्रीय संस्कार देकर अनेक राग बनाए गए हैं। भटियारी, पूरबी, जौनपुरी, सोरठा और मुलतानी जैसे अनेक राग बंगाल, बिहार, पंजाब और सौराष्ट्र के अंचलों में गाए जाने वाले लोकगीतों की धुनों से निर्मित हुए हैं। इतना ही नहीं, प्रकृति में व्याप्त स्वरों से भी रागों की निर्मितियाँ हुई हैं। कई समर्थ गायकों ने आंचलिक गीतों को शास्त्रीय पद्धति में ढालकर विशिष्ट गायकी द्वारा ख्याति अर्जित की है। लोकगीतों का सीधा संबंध प्रकृति से है। प्रकृति में अपना छंद है, लय है। स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक प्रकृति के छंदों की अनुभूति से मिली समाहारकारी दृष्टि से राग की प्रकृति और उसे प्रसूत करने वाली प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध तय नहीं कर लिया जाता।

   संगीत में जिस बिंदु पर लय और ताल एक-दूसरे से मिलते हैं उसे सम कहते हैं। लय है प्रकृति की विभिन्नता - सामयिकता और ताल है एकत्व - शाश्वतता। इन दोनों के मिलन से संस्कृति बनती है। संस्कृति न तो प्रकृति की यथास्थिति की

स्वीकृति है, न विद्रोह। यह विभिन्नता में संस्कार द्वारा याचित एकत्व का नाम है। "प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना संयोजन विकृति है और सामाजिक मंगल की दृष्टि से उनका संयोजन संस्कृति है।"

i. गद्यांश को पढ़कर उपयुक्त शीर्षक लिखिए। **(1)**
ii. भारतीय शास्त्रीय संगीत की विलक्षणता क्या है ? **(1)**
iii. रागों की निर्मितियाँ कैसे हुई हैं? **(2)**
iv. स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया से लेखक का क्या तात्पर्य है? **(2)**
v. 'सम' क्या है और इसका संगीत में क्या महत्त्व है? **(2)**
vi. भारतीय शास्त्रीय संगीत और प्रकृति के बीच का अंतर्संबंध क्या है? **(2)**
vii. संस्कृति कैसे बनती है? समाज से इसका क्या संबंध है? **(2)**

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×4=4)**

सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है।
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

i. क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है?
ii. प्रतिशोध किसे कहते हैं? वह कब आवश्यक होता है?
iii. सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया?
iv. कैसा युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है?

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

आज की बचत कल का सुख विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. किसी पर्यटन स्थल के होटल के प्रबंधक को निर्धारित तिथियों पर होटल के दो कमरे आरक्षित करने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए। पत्र में उन्हें कारण भी बताइए कि आपने वही होटल क्यों चुना।

OR

निकट के शहर से आपके गाँव तक की सड़क का रख-रखाव संतोषजनक नहीं है। मुख्य अभियंता, लोक-निर्माण विभाग को एक पत्र लिखकर तुरंत कार्यवाही का अनुरोध कीजिए। समस्या के निदान के लिए एक सुझाव भी दीजिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. फोन-इन का आशय समझाइए।

   b. रेडियो की लोकप्रियता के क्या कारण हैं?

   c. समाचार शब्द को परिभाषित कीजिए।

   d. फ्री लांसर पत्रकार किसे कहते हैं?

   e. लोकतंत्र का चौथाखंभा किसे कहा जाता है और क्यों?

6. कन्या भ्रूण-हत्या की समस्या विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

भ्रष्टाचार का दानव विषय पर एक फ़ीचर लिखिए।

OR

वर्तमान युग में इंटरनेट की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

Section C

7. **निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिजिएः**

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ |
मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ |

i. संसार किनको महत्व देता है? कवि हरिबंश राय बच्चन को वह महत्व क्यों नहीं दिया जाता?
ii. 'उद्‌गार' और 'उपहार' कवि हरिबंश राय बच्चन को क्यों प्रिय हैं?
iii. आशय स्पष्ट कीजिएः
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ |

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)

उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।

i. राम लक्ष्मण की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख कर रहे हैं?
ii. "सो अनुराग कहाँ अब भाई" कथन का कारण स्पष्ट कीजिए।
iii. "यह मुझे पहले ज्ञात होता तो मैं पिता की आज्ञा नहीं मानता" -क्या ऐसा संभव था? पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए।

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x2=4)**

खरगोश की आँखों जैसा लाल सबेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साईकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से।

i. काव्यांश में आए बिंबों का उल्लेख कीजिए।
ii. प्रकृति में आए परिवर्तनों की अभिव्यक्ति कैसे हुई है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

i. काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
ii. मनोभावों की तुलना किससे की गई है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. **उड़ने और खिलने** का कविता से क्या संबंध बनता है? (कविता के बहाने)

b. **स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने** -इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

c. **फ़िराक** की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

10. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x3=6)**

फिर जीजी बोलीं, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ। अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, क़स्बा, गाँव पर पानीवाले फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषिमुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हे चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भईया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।

i. बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करते हैं?
ii. त्याग की महत्ता को किसने बताया था? समाज के लिए यह क्यों ज़रूरी है?
iii. "यथा प्रजा तथा राजा' से जीजी क्या कहना चाहती थीं?

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस

चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू अपने आप में सत्य नहीं हैं? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गाँधीजी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतने कोमल और इतने कठोर हो सकते थे। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है-हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?

i. शिरीष का वृक्ष लेखक पर क्या प्रभाव डालता है?
ii. लेखक शिरीष की किस विशेषता की चर्चा करता है?
iii. शिरीष स्थिर कैसे रह सका?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? **बाज़ार दर्शन** पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

b. **नमक** पाठ के आधार पर बताइए कि सफिया और उसके भाई के विचारों में क्या अंतर था?

c. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

d. चार्ली चैप्लिन की छवि कैसी थी?

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. क्या पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को **सिल्वर वैडिंग** कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

b. यशोधर बाबू बार-बार किशनदा को क्यों याद करते हैं? इसे आप उनका सामर्थ्य मानते हैं या कमज़ोरी?

c. **जूझ** कहानी में पिता को मनाने के लिए माँ और दत्ता जी राव की सहायता से एक चाल चली गई है। क्या ऐसा कहना ठीक है?

d. **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

e. सिंधु-सभ्यता में खेती का उन्नत रूप भी देखने को मिलता है, स्पष्ट कीजिए।

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 03 (2019-20)

Solution

Section A

1. i. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है- 'संगीत और संस्कृति में भारतीय शास्त्रीय संगीत का महत्व'।
   ii. भारतीय शास्त्रीय संगीत की विलक्षणता ये है कि उसकी हर प्रस्तुति में एक नवीनता आ जाती है।
   iii. रागों की निर्मितियाँ लोकगीतों को शास्त्रीय संस्कार देकर तथा आंचलिक लोकगीतों का समन्वय करके प्रकृति में व्याप्त स्वरों को सम्मिलित करके हुई।
   iv. स्वरों की संस्कार-प्रक्रिया से लेखक का तात्पर्य आंचलिक गीतों को शास्त्रीय संगीत से जोड़ कर राग और प्रकृति का संबंध स्थापित करने से है।
   v. संगीत का उच्चतम बिंदु, जहाँ लय और ताल मिलते हैं, सम कहलाता है। सम का संगीत में ये महत्व है कि उस बिंदु पर श्रोता को आनंद की प्राप्ति होती है।
   vi. भारतीय शास्त्रीय संगीत और प्रकृति के अंतर्संबंध का अर्थ है प्रकृति में व्याप्त स्वरों को संगीत में सम्मिलित करना और उसके आधार पर संगीत का निर्माण करना।
   vii. संस्कृति प्रकृति की विभिन्नता, सामयिकता और शाश्वतता के मिलन से बनती है। समाज से इसका संबंध है कि प्राकृतिक शक्तियों का सामाजिक मंगल के लिए प्रयोग होता है।
2. i. क्षमा असहाय होकर करने पर कलंक और क्षमतावान होने पर करने से शृंगार हो जाती है।
   ii. प्रतिशोध किसी के प्रति बदले की भावना को कहते हैं, यह आत्मसम्मान की रक्षा हेतु आवश्यक होता है ।
   iii. विजयी होकर क्षमा करना विभूषण है और पराजित होकर सहष्णिुता दिखाना अभिशाप है ।
   iv. लोभ और स्वार्थवश किया गया युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।
प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः

जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।
प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-
"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"
अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।
परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।
इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

OR

आज की बचत कल का सुख

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर

रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

4. सेवा में,

   प्रबंधक महोदय,

   स्पार्क हेवन होटल,

   नैनीताल, उत्तराखंड।

   17 अप्रैल, 2019

   विषय -होटल में कमरे आरक्षित करवाने हेतु।

   महोदय,

   मैं जय प्रकाश, दिल्ली का निवासी हूँ। मैंने आपके होटल की आवभगत के विषय में बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं और मेरा परिवार दिनांक 25 अप्रैल, 2019 से 27 अप्रैल, 2019 तक नैनीताल में पर्यटन के उद्देश्य से आ रहे हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अप्रैल 20, 2019 से 27 अप्रैल 27 , 2019 तक की दिनांक के लिए मेरे नाम से दो कमरे आरक्षित कर दीजिए।

   धन्यवाद

   भवदीय

   जय प्रकाश

   दिल्ली

OR

सेवा में

मुख्य अभियंता,

लोक निर्माण विभाग,

दिल्ली।

15 अप्रैल, 2019

विषय - सड़कों के रख-रखाव हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं गोविन्द प्रसाद, बसई गाँव का निवासी हूँ। निकट के शहर से हमारे गाँव को जो सड़क जोड़ती है ,उसका अभी कुछ ही दिनों पूर्व लोक निर्माण विभाग की ओर से निर्माण करवाया गया था। सड़क का उचित रख-रखाव न करने के कारण सड़क पर दोनों ओर गंदगी फैली रहती है, लोग अपने घर का कूड़ा वहाँ डालने लगे हैं। इसके अतिरिक्त सड़क भी बीच-बीच में कई जगह से टूट गई है,और सड़क पर जगह-जगह गढ्ढे़ बन गए हैं, जिससे आने-जाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः महोदय मेरा आपसे अनुरोध है कि सड़क पर कूड़ा डालने वाले लोगों को चेतावनी देकर वहाँ पर कूड़ा न डालने का निर्देश दिया जाए और सड़क को पुनः निर्माण करके उसे उपयोग करने के लायक बनाया जाए।

आशा है कि आप मेरे इस पत्र द्वारा प्राप्त सूचना पर शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाएँगे।

धन्यवाद

भवदीय

गोविन्दप्रसाद

बसई गाँव

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. **फोन इन** कार्यक्रम रेडियो या टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले वे कार्यक्रम होते हैं, जिनमे किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या जागरूकतापरक कार्यक्रम में दर्शकों को फोन करके जानकारी ग्रहण करने या अपने विचार प्रस्तुत करने का अधिकार होता है।

   b. रेडियो के लोकप्रियता के कारण निम्नांकित हैं -

      - सस्ता व सुलभ साधन
      - अन्य कार्य करते हुए भी रेडियो का उपयोग संभव
      - व्यापक प्रसार और दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुँच

   c. समाचार का अंग्रेजी पर्याय (NEWS) चारो दिशाओं को सांकेतिक करता है। अपने आस-पास के समाज एवं देश-दुनिया की घटनाओं के विषय मे त्वरित एवं नवीन जानकारी, जो पक्षपात रहित एवं सत्य हो, समाचार कहलाता है।

   d. फ्री लांसर पत्रकार किसी पत्र या पत्रिका में नौकरी नहीं करता, बल्कि वह किसी भी समाचार-पत्र को लिखकर पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

   e. लोकतंत्र का चौथाखंभा मीडिया को कहा जाता है क्योंकि मीडिया का कार्य जनता को जागरूक करके उसकी आवाज बनना है

6. **कन्या भ्रूण-हत्या की समस्या**

वर्तमान समय में कन्या भ्रूण हत्या एक बहुत ही बड़ी समस्या है, जो भारत में कुछ ज्यादा ही प्रबल है। भारत में लड़कियों का अनुपात निरंतर घटता ही जा रहा है। दक्षिण भारत की अपेक्षा उत्तर भारत तथा पश्चिमी भारत में यह समस्या प्रबल रूप में दृष्टिगत होती है। हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में यह समस्या भयावह रूप धारण कर चुकी है। हरियाणा में 1,000 लड़कों के अनुपात में 877 लड़कियाँ है। ऐसी ही स्थिति उपरोक्त सभी राज्यों की है।

दक्षिण भारतीय राज्यों, जैसे केरल, कर्नाटक आदि में लड़के-लड़कियों के अनुपात में अधिक अंतर नहीं है। वस्तुतः दहेज प्रथा के कारण अनेक निर्धन माता-पिता कन्या भ्रूण हत्या का घृणित कृत्य कर बैठते हैं।

पिछले अनेक वर्षों से हज़ारों डॉक्टर कन्या भ्रूण हत्या के जघन्य कार्य द्वारा लाखों रुपये महीना कमा रहे हैं। कन्या भ्रूण हत्या करना अपराध है। दिल्ली, गुजरात और महाराष्ट्र में कुछ समय पूर्व अनेक डॉक्टरों को इस अपराध के लिए जेल भेजा गया, परंतु जब कानून बनाने वाले ही कानून का उल्लंघन करते हैं, तो चिकित्सक पाप की सरिता में स्नान क्यों न करे? कई राज्यों में लाखों युवको को कन्या न मिलने के कारण अविवाहित रहना पड़ता है। इस कारण बलात्कार की घटनाओं में भी वृद्धि हुई है। अभिनेता आमिर खान ने 'सत्यमेव जयते' में कन्या भ्रूण हत्या पर कार्यक्रम प्रदर्शित कर सामाजिक चेतना जागृत की थी, परंतु अब भी लाखों निदोंष कन्याओं की हत्या हो रही है। वास्तव में, कन्या भ्रूण हत्या के दोषी को कड़ी सजा मिलनी चाहिए तथा दहेज प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध लगना चाहिए, तभी इस विकराल समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है। साथ ही इसके प्रति लोगों को जागरूक करने की भी जरूरत है।

OR

भ्रष्टाचार का दानव

भ्रष्टाचार से तात्पर्य भ्रष्ट व्यवहार या अनैतिक व्यवहार से है। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज भारतवर्ष भ्रष्टाचार का गढ़ बन गया है। सामाजिक जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं रह गया है, जिसमें ईमानदारी का वर्चस्व हो। किसी विद्यालय में प्रवेश पाने का मुद्दा हो या नौकरी मिलने का, कोई घरेलु कार्य कराना हो या कार्यालयी कार्य, भ्रष्टाचार सभी जगह व्याप्त है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार अपने आप को और विस्तारित करते हुए दानव का रूप धरते जा रहा है।

सरकारी कार्यालयों में तो चक्का तभी घूमता है, जब उसमें घूस का पेट्रोल डाला जाता है। परिवहन विभाग का मामला हो या पुलिस विभाग का, गाड़ी चलाना जाने बिना ड्राइविंग लाइसेंस ले लीजिए, लेकिन एक निश्चित कीमत चुकाकर। पुलिस विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार के तो कहने ही क्या? जब अपराधी निकल जाता है, तब पुलिस हवा में डंडे चलाती आती है और बेकसूरों को पकड़कर ले जाती है ताकि कागज़ी कार्रवाई की जा सके।

इस देश का सबसे बड़ा भ्रष्टाचारी है-राजनेता, जिसने देश को दलालों का बाज़ार बनाकर रख दिया है। भारत में भ्रष्टाचार इसलिए पनपता है क्योकि यहाँ का नेता स्वयं भ्रष्ट है। यही कारण है कि वह भ्रष्ट लोगों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं करता, कड़ी कार्यवाही तो दूर की बात है।

भारतीय प्रेस या मीडिया अभी भी पूरी तरह नि:स्वार्थी एवं सतर्क नहीं है। भ्रष्टाचार के दानव को तभी समाप्त किया जा सकता है, जब कोई सशक्त राजनीतिक दल अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति दिखाए। इसके अतिरिक्त, भारत के शिक्षक,

साहित्यकार, पत्रकार, कृषक, मज़दूर, कलाकार आदि सभी एकजुट होकर देश के नवयुवको में सच्चे आचरण संबंधी संस्कार उत्पन्न करें तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध सशक्त संघर्ष छेड़ें। भ्रष्टाचार का सामना सभी को एक साथ मिलकर ही करना होगा क्योंकि इसको रोकना किसी एक के वश में नहीं, सब एकजुट होकर ही इसको जड़ से उखाड़ सकते हैं।

OR

वर्तमान युग में इंटरनेट के महत्व से कौन अपरिचित है। आज यह लेखन अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त तथा सर्वव्यापी माध्यम बन चुका है। आज के 10 साल पूर्व जो भी रचनात्मक लेखन होता उसके प्रकाशन के लिए समाचार पत्र या पत्रिकाओं पर ही निर्भर रहना पड़ता था। पर आज इंटरनेट ने चमत्कारी रूप से इस समस्या का निराकरण कर दिया है। यदि कोई व्यक्ति कविता, कहानी, लेख या फीचर लिखने में सक्षम है तो इसे टाइप कर इंटरनेट के माध्यम से अपने ब्लाग पर या सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपने अकाउंट पर पोस्ट कर सकता है। पलक झपकते ही इस सामग्री को संसार के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति पढ़ सकता है। आज के युग में इंटरनेट सबसे सस्ती और विश्वव्यापी संचार प्रणाली बन गया है। अब तो 4 जी कनेक्टिविटी ने इसकी गति को दस गुना अधिक कर दिया है।

Section C

7. i. संसार उन लोगों को महत्व देता है जो सांसारिकता को ही सर्वोत्तम मानते हैं और हमेशा संसार के ही यशोगान में डूबे रहते हैं जबकि कवि सांसारिकता से दूर रहता है और हमेशा अपने मन की करता है। इसलिए संसार कवि को महत्व नहीं देता है।

   ii. कवि को उद्गार इसलिए पसंद है क्योंकि इस उद्गार में प्रेम-स्नेह के भाव समाए हैं, जिन्हें वह दुनिया को देना चाहते हैं। उसे उपहार इसलिए पसंद हैं क्योंकि उसके हृदय रूपी उपहार में प्रेम के कोमल भाव समाए हैं जिनसे वह संसार को सुखमई बनाना चाहते हैं।

   iii. **आशय-** कवि को लगता है कि बाहरी संसार प्रेम के बिना अपूर्ण है और नाना विकारों से युक्त है इसलिए ऐसा संसार उसे नहीं भाता है। कवि के मन में प्रेम से परिपूर्ण संसार का एक सपना है जिसे वह साकार रूप देना चाहता है।

OR

i. राम ने लक्ष्मण की निम्नलिखित विशेषताएं बताते हैं-
   - वे राम को अत्यधिक स्नेह करते हैं तथा कभी उन्हें दुःखी नहीं देख सकते हैं।
   - वे कोमल स्वभाव के हैं।

i. राम जी व्याकुल होकर कह रहे हैं कि "लक्ष्मण तुम तो मुझे बहुत प्रेम करते हो, मुझे कभी दुःखी नहीं देख सकते थे। मेरी यह स्थिति देखकर भी तुम चुपचाप पड़े हो। तुम शीघ्र चैतन्य होकर मेरी पीड़ा दूर कर दो।"

ii. ऐसा संभव नहीं था कि श्री राम अपने पिता की आज्ञा का पालन नहीं करते। वे लक्ष्मण से बहुत प्रेम करते हैं। अतः भावावेश में कह रहे हैं कि "यदि उन्हें ऐसी स्थिति की कल्पना होती, तो वे पिता के आदेश का पालन नहीं करते।" प्रभु राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे मर्यादा की रक्षा के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

8. i. उपर्युक्त पदयांश के आधार पर कवि ने दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया है जैसे -
   - खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

- शरद ऋतु के प्रारंभ का बच्चे के रूप में चित्रण करते हुये उसका अपनी नई साइकिल तेजी से चलाते और घंटी बजाते हुए आना।

ii.
- वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद ऋतु के खुशनुमा आगमन पर प्रकृति में परिवर्तन होते हैं जैसे मौसम साफ होने के कारण बच्चों के खेलकूद कर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करते हैं।
- चारों ओर मनभावनी चमकीली कोमल धूप बिखरी रहती है।

OR

i. प्रस्तुत काव्यांश में खेती के कार्यों के रूपकों के जरिए कवि ने अपने रचना-कर्म को व्याख्यायित किया है। जिस प्रकार खेत में बीज बोया जाता है, वैसे ही कवि मनोभावों और विचारों के बीज बोता है। इस बीजारोपण से शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं और साहित्यिक कृति रूपी फसल विकसित होती है। इसके माध्यम से कवि ने साहित्य की जीवंतता और अनंतकाल तक उसके अस्तित्व में बने रहने की बात कही है।

ii. मनोभावों की तुलना 'अंधड़' से की गई है क्योंकि भावना एवं विचार आँधी की तरह मन में आते हैं तभी तीव्र मनोभावों की उत्पत्ति द्वारा काव्य-सृजन होता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. पंछी की उड़ान और कवि की कल्पना की उड़ान दोनों दूर तक जाती हैं। दोनों का लक्ष्य ऊँचाई मापना होता है। कविता में कवि की कल्पना की जो उड़ान है जिसकी सीमा अनन्त होती है, वह कल्पनाओं को पंख देकर अनंत ऊंचाइयों को छू सकता है इसीलिए कहा गया है - 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'
जिस प्रकार फूल खिलकर अपनी सुगंध एवं सौंदर्य से लोगों को आकर्षित कर आनंद और जीवन देता है उसी प्रकार कविता भी सदैव खिली रहकर लोगों को भावों -विचारों का रसपान कराती है, पाठकों में नवीन स्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार करती है। दोनों का उद्देश्य एक समान अर्थात पाठकों एवं रसिको के हृदय को सुकून पहुँचाना होता है।

b. कवि कहता है कि सुबह के समय अँधेरा होने के कारण आकाश स्लेट के समान लगता है। उस समय सूर्य की लालिमा-युक्त किरणों से ऐसा लगता है जैसे किसी ने काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। कवि आकाश में छायी हुई लालिमा के बारे में बताना चाहता है।

c. **फ़िराक** की रुबाइयों में घरेलू जीवन का चित्रण हुआ है। इन्होनें कई बिंब उकेरे हैं। एक बिंब में माँ छोटे बच्चे को अपने हाथ में झुला रही है। बच्चे की तुलना चाँद से की गई है। दूसरे बिंब में, माँ बच्चे को नहलाकर कपड़े पहनाती है तथा बच्चा उसे प्यार से देखता है। तीसरे बिंब में, बच्चे द्वारा चाँद लेने की ज़िद लगाना तथा माँ द्वारा दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर बच्चे को बहलाने की कोशिश को बताया गया है। ये सभी बिंब लगभग हर घरेलू जीवन में पाए जाते हैं।

10. i. किसान जमीन की निराई, गुड़ाई करके मिट्टी तोड़कर हल चलाकर खेत तैयार करता है और फिर बीज-खाद डालकर , सिंचाई करता है तब जाकर फसल तैयार होती है।

ii. ऋषि मुनियों ने बताया है पहले स्वयं देना होगा तभी देवता उसे कई गुना करके लौटाएँगे।

iii. इस कथन का अर्थ है कि प्रजा में इतनी शक्ति होती है कि वह अपने अनुसार राजा को चलने के लिए बाध्य कर सकती है।

OR

i. एक अवधूत के समान शिरीष का वृक्ष लेखक के मन में इस प्रकार की तरंगें जगा देता है, जो हमेशा ही ऊपर की ओर उठती रहती हैं।

ii. शिरीष की विशेषता है कि वह चिलचिलाती धूप में भी सरस बना रहता है। वह बाहरी परिवर्तनों, धूप, वर्षा, आँधी, लू आदि को झेलकर भी स्थिर बना रहता है।

iii. शिरीष एक कालजयी अवधूत के समान है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर कोमल और कठोर बना रहता है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. बाज़ार के तड़क-भड़क और रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मजबूर हो जाता है तो उसे बाज़ार का जादू कहते हैं। बाज़ार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव ने होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर ज़रूरी चीज़े खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीज़ें आराम में मदद नहीं करतीं, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं। इससे वह झुँझलाता है, परंतु उसके स्वाभिमान को सेंक मिल जाती है।

b. i. सफिया भावनाओं को बहुत महत्व देती है पर उसका भाई बौद्धिक प्रवृति का है, उसकी दृष्टि में कानून भावनाओं से ऊपर है।

ii. सफिया मानवीय संबंधों को बहुत महत्व देती है जबकि उसका भाई अलगाववादी विचारधारा का है।

iii. सफिया का भाई कहता है कि आदीबो (साहित्यकार) का दिमाग घूमा हुआ होता है जबकि सफिया का मानना है कि अगर सभी लोगों का दिमाग अदीबों की तरह घूमा हुआ होता तो दुनिया कुछ बेहतर हो जाती।

c. यद्यपि भक्तिन महादेवीजी की सेवा पूरे मन से करती थी तथापि कई गुणों के साथ-साथ भक्तिन के व्यक्तित्व में कुछ दुर्गुण भी निहित थे-

i. वह घर में इधर-उधर पड़े रुपये-पैसे भंडार घर की मटकी में छुपा देती थी और अपने इस कार्य को चोरी नहीं मानती थी।

ii. महादेवी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन बात को इधर-उधर करके बताने को झूठ नही मानती थी। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए वह तर्क-वितर्क भी करती है।

iii. वह दूसरों को अपनी इच्छानुसार बदल देना चाहती थी पर स्वयं बिलकुल नही बदलती।

iv. वह शास्त्रीय बातों की व्याख्या अपनी इच्छानुसार करती थी और उन्हें अपने नियमों एवं आदतों को उस आधार पर सही ठहरा कर ही मानती थी।

d. फ़िल्मों में चार्ली चैप्लिन की छवि एक ट्रैम्प की थी। वह कई रूपों में हमारे सामने आया किंतु वह सबसे ज्यादा प्रिय तभी लगा जब वह फ़िल्मों में बुद्धू, खानाबदोश या आवारागर्द बना। इन भूमिकाओं ने उसे प्रत्येक वर्ग के आदमी से जोड़ दिया। इन रूपों की जीवंत भूमिका ने उसे विश्व में लोकप्रिय कलाकार बना दिया। चार्ली चैप्लिन अब अभिनेता (हास्य कलाकार) न रहकर ट्रैम्प बन चुका था। यही उनकी लोकप्रियता थी।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. **सिल्वर वैडिंग** कहानी में युवा पीढ़ी को पाश्चात्य रंग में रंगा हुआ दिखाया गया है। इस पीढ़ी की नजर में भारतीय मूल्य व परंपराओं के लिए कोई स्थान नहीं है। वे रिश्तेदारी, रीति-रिवाज, वेशभूषा आदि सबको छोड़कर पश्चिमी रूप को अपना रहे हैं, परंतु यह कहानी की मूल संवेदना नहीं है, वास्तव में कहानी की मूल संवेदना 'पीढ़ी का अंतराल' है। कहानी के पात्र यशोधर पुरानी परंपराओं को जीवित रखे हुए हैं, भले ही उन्हें घर में अकेलापन सहन करना पड़ रहा हो। वे अपने दफ्तर व घर में विदेशी परंपरा पर टिप्पणी करते रहते हैं। इससे तनाव उत्पन्न होता है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पीढ़ी अंतराल के कारण ज्यादा रहता है।

b. यशोधर बाबू किशनदा को बार-बार याद करते हैं। उनका विकास किशनदा के प्रभाव से हुआ है। वे किशनदा की प्रतिच्छाया हैं। यशोधर छोटी उम्र में ही दिल्ली आ गए थे। किशनदा ने उन्हें घर में आसरा दिया उनको आर्थिक मदद देकर नए शहर में रहने के लिए सहारा बने तथा नौकरी दिलाई। यशोधर बाबू उनकी हर बात का अनुकरण करते थे। ऑफिस, टहलना, बात कहकर मुस्कराना, रिटायरमेंट के बाद गाँव जाना आदि सभी पर किशनदा का प्रभाव है। यहाँ तक कि उनके सभी क्रियाकलापों में किशनदा का ही प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।
यह उनका सामर्थ्य ही कहा जायेगा क्योंकि वे विषम परिस्थितियों में भी अपने आदर्श को नहीं भूलते और उनके द्वारा बताये गए मार्ग पर चलते हैं; बावजूद इसके कि उन्हें अनेक कष्टों से गुजरना पड़ा, लोगों की बातें सुननी पड़ीं एवं परिवार में एवं ऑफिस के लोगों से मतभेद हुआ।

c. 'जूझ' कहानी में पिता को मनाने के लिए माँ और दत्ता जी राव की सहायता से एक चाल चली गई है। यह कहना बिल्कुल ठीक है। लेखक के पिता उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे। वे खुद अय्याशी करने के लिए बच्चे को खेती के काम लगाना चाहते थे। पढ़ने की बात करने पर वे जंगली सूअर की तरह गुर्राते थे। किसी भी स्थिति में उनकी अपने पुत्र को आगे पढ़ाने की इच्छा नहीं थी। उन पर दत्ता जी राव का दबाव ही काम कर सकता था। अतः लेखक की माँ व दत्ता जी राव ने मिलकर उन्हें मानसिक तौर पर घेरा तथा आगे पढ़ने की स्वीकृति ली। यदि यह उपाय नहीं किया जाता तो लेखक कभी शिक्षित नहीं हो पाता।

d. **अतीत में दबे पाँव** लेखक के वे अनुभव हैं, जो उन्हें सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। इस पाठ में लेखक सभ्यता के अतीत में झाँककर वहाँ के निवासियों और क्रियाकलापों को अनुभव करता है। वहाँ की एक-एक स्थूल चीज से मुखातिब होता हुआ लेखक चकित रह जाता है। वे लोग कैसे रहते थे? यह अनुमान आश्चर्यजनक था। वहाँ की सड़कें, नलियाँ, स्तूप, सभागार, अन्न भंडार, विशाल स्नानागार, कुएँ, कुंड और अनुष्ठान गृह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था देखकर लेखक महसूस करता है कि जैसे अब भी वे लोग वहाँ हैं। उसे सड़क पर

जाती हुई बैलगाड़ी से रुनझुन की ध्वनि सुनाई देती है। किसी खंडहर में प्रवेश करते हुए उसे अतीत के निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। रसोईघर की खिड़की से झाँकने पर उसे वहाँ पक रहे भोजन की गंध भी आती है। यदि इन लोगों की सभ्यता नष्ट न हुई होती तो उनके पाँव प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ रहे होते और आज भारतीय उपमहाद्वीप महाशक्ति बन चुका होता, मगर दुर्भाग्य से ये प्रगति की ओर बढ़ रहे सुनियोजित पाँव अतीत में ही दबकर रह गए इसलिए 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक पूर्णतः सार्थक और सटीक है।

e. सिंधु-सभ्यता की खोज की शुरूआत में यह माना जा रहा था कि इस घाटी के लोग अन्न नहीं उपजाते थे। वे अनाज संबंधी जरूरतें आयात से पूरा करते थे, परंतु नयी खोजों से पता चला कि यहाँ उन्नत खेती होती थी। अनाज रखने के लिए यहाँ कोठार भी मिले हैं तथा फसलों की ढुलाई के लिए बैलगाड़ी के साक्ष्य मिले हैं। अब कुछ विद्वान इसे मूलतः खेतिहर व पशुपालक सभ्यता मानते हैं। खेती में ताँबे व पत्थर के उपकरण प्रयोग में लाए जाते थे। यहाँ रबी की फसल-गेहूँ, कपास, जौ, सरसों व चने की खेती होती थी। इनके सबूत भी मिले हैं। कुछ विद्वानों का विचार है कि यहाँ ज्वार, बाजरा और रागी की उपज भी होती थी। लोग खजूर, खरबूजे और अंगूर उगाते थे।